तात्त्विक दृष्टि से मधुकर गौड़ के नवगीत

शुचि स्नेहा
शोध छात्रा, हिन्दी
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया।

नवगीत गीत की अपेक्षा आकार–प्रकार में संक्षिप्त और सहज होते हैं। संक्षिप्त होने बावजूद इनमें हल्कापन का नाम नहीं होता है। बिल्कुल बिहारी के दोहों सा ये गहरी चोट पहुँचाते हैं।

'सतसइया के दोहरे ज्यौं नावक के तीर।
देखन में छोटन लगैं घाव करैं गंभीर'।।

सहजता गीत काव्य का प्रथम लक्षण है। यहाँ गीत काव्य से तात्पर्य, गीत के नए–पुराने सभी पर्यायवाची नामों से है। यथा – गीत, गीति, नवगीत, नयेगीत, नवीन गीत आदि। शब्दकोशों में गीति शब्द को गीत का समानार्थी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है। 'गीति' स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द है। इसे गीत के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। वस्तुतः 'गीति' संस्कृत शब्द स्रोत से प्राप्त विशेषण पद है। इसका कोशगत अर्थ है – ''गाया हुआ; वर्णित; जिसका यश गाया गया हो।''[1] इसका अर्थ हो जाता है – वह जो गाया जाय, गाने की चीज, गान, बड़ाई। साहित्य एवं काव्य में गीति को गीत का पर्याय मानकर गेय विधा के अर्थ में ग्रहण किया गया है और इसी रूप में उसका प्रयोग मिलता है। आधुनिक काल में पूर्व तक हिन्दी काव्य में गीत कविता का पर्यायवायी रहा। आधुनिक काल में जब पाश्चात्य प्रभाव के कारण कविता छन्द से छिटक कर दूर चली गयी और सर्वत्र गेय नहीं रही तब उसका गीत विधा के रूप में प्रस्थापन अनिवार्य हो गया। ''आधुनिक पाश्चात्य दृष्टिकोण के अनुसार कविता के दो भेद माने गए हैं –

(1) व्यक्तित्व प्रधान अथवा विषयगत (नइरमबजपअम)
(2) विषय प्रधान अथवा विषयगत (व्इरमबजपअम)

..... विषय प्रधान में भावनाओं और आदर्शों की प्रधानता रहती है। भाव प्रधानता के कारण उसमें गीतिकाव्य को प्रगीति कहते हैं। अंग्रेजी में स्लतपब इसे कहा जाता है।''[2] 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी गीति को ही गीत और कहीं प्रगीत कहा है।' जहाँ भी गीति की परिभाषा हुई है वहाँ गीत तत्व अनिवार्य रूप से उपस्थित है। ऐसी स्थिति में गीतिकाव्य गीत काव्य से दूर नहीं है। संपूर्णता में देखा जाए तो जहाँ स्वर, लय, ताल और भाव सामान्य प्रभाव डालते हैं वहाँ गीत की स्थिति बनती है और जहाँ इनका चरम उत्कर्ष होता है वहाँ गीति दशा होती है। डॉ0 शंभूनाथ सिंह की यह निम्नलिखित परिभाषा नवगीत के तत्वों की ओर इशारा करती है। ''गीतिकाव्य संगीतात्मक रूप में प्रयुक्त ऐसे शब्दों की योजना है जो तीव्र वैयक्तिक और संवेदनात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करते हैं।''[3]

डॉ0 मिश्र – ''गीत एक विधा है और समसामयिक परिवर्तनों के साथ चिरन्तर विधा है। यह मात्र अन्वेषित नहीं बल्कि मानव मन की सहजात विधा है।''[4] तथा ''गीत की अनिवार्य विशेषताएँ ये मानी जा सकती है। (अ) स्वानुभूति की तीव्रता (आ) लघु आकार (इ) प्रभाव की समग्रता''[5]

तो वहीं डॉ0 रवीन्द्र भ्रमर के अनुसार – ''अनुभूति की ताजगी, अभिव्यक्ति का सीधापन, भाषा की सरलता, तुकाग्रह से परे, छंद की एक स्वभाविक लचीली गति तथा संक्षिप्तता कुल मिलाकर मेरी समझ में नवगीत सृजन की कुछ आवश्यक शर्त्तें हैं।''[6]

तत्व किसी रचना की अनिवार्यता है। बिना तत्व के कोई रचना रची जा सकती है और न कोई रचना नई संज्ञा पा सकती है। वस्तुतः तत्व ही रचना का अनिवार्य आधार है। किसी भी रचना या विधा की परख के लिए उसका तात्त्विक विश्लेषण किया जाना अति–आवश्यक होता है।

नवगीत शब्द को प्रयोग करने वालों ने इसके तत्वों पर प्रकाश डाला है। ''नवगीत के पाँच विकासशील तत्व हैं – जीवन दर्शन, आत्मनिष्ठा, व्यक्तित्व बोध, प्रीति तत्व और परिसंचय।''[7] 'नवगीत' ने अपने जातीय संस्कारों को धूमिल नहीं होने दिया है। ''नवगीत आज की कविता का ऐसा रूप है जो पूर्वापर निष्ठा, संवेदना और विशुद्ध मानवीयता से युक्त पूर्ण यथार्थ से साक्षात्कृत

अनुभूतियों की काव्य अभिव्यक्ति है।''[8] गीतकार नीरज भी कहते हैं – ''गीत का दूसरा वायदा है – भावुकता रागात्मकता का। भावुकता रागात्मकता का एक सनातन मूल्य है।''[9]

अतः उपर्युक्त विवेचन में नवगीत काव्य के सर्वमान्य तत्वों के रूप में निम्नलिखित नाम उभरते हैं –

1) वैयक्तिकता 2) संगीतात्मकता
3) भावावेश 4) संक्षिप्तता
5) गत्यात्मकता 6) रसात्मकता

जिसमें प्रथम चार की प्रमुखता अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

वैयक्तिता – वैयक्तिता गीति काव्य का यानि नवगीत का भी अनिवार्य तत्व है। इसका सम्बन्ध काव्य के भाव पक्ष से होता है और यही काव्य की आधारभूत सामग्री भी है। क्योंकि कवि जिस अनुभूति को आत्मसात करके अभिव्यक्ति के लिए तत्पर है, वही अनुभूति उसके पाठक और श्रोता में भी हो तभी उसका साधारणीकरण संभव है। साधारणीकरण के आभाव में रचनाकार की वैयक्तिक अनुभूति का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। वैयक्तिकता के कसौटी पर कविवर मधुकर गौड़ के नवगीत का परीक्षण करने ज्ञात होता है कि श्री गौड़ के अर्न्तमन के गूढ़ आवेग और उनकी अनुभूतियाँ ही उनके काव्य का विषय बने है। प्रेम, देशभक्ति, स्वस्थ्य समाज के निर्माण की चिन्ता, रूढ़ियों से मुक्ति की आकांक्षा ऐसे कितने ही विषय हैं जो इनके नवगीत के विषय–वस्तु बने हैं। इनमें जैसी वैयक्तिक अनुभूतियाँ गौड़ जी ने व्यक्त की है, वैसी अनुभूतियाँ प्रायः प्रत्येक भारतीय की होती है। कविवर गौड़ ने मनुष्य के प्रेम की दुर्बलता और कामना को वैयक्तिक होते हुए भी सार्वजनिक किया है। प्रत्येक सहृदय एवं सज्जन प्रेम की दुर्बलता से ग्रसित है। प्रेम व्यापार की बदनामी होने की दुर्बलता को वैयक्तिक स्तर से सार्वजनिक स्तर पर मधुकर गौड़ ने 'प्यार का अर्थ' शीर्षक नामक नवगीत में व्यक्त किया है।

मुश्किल तो हर आँगन में उतरा करती है,
दुःख से घायल हर मन का उजियारा है।
सागर का विस्तार किसे क्या भय देगा,
लहरों के संबल का नाम किनारा है।

प्रेम में जीवन भर की टीस और पीड़ा मिलती है। कविवर गौड़ को भी इसका एहसास है, अनुभव है। 'लौट आओगी' की कुछ पंक्तियाँ देखें –

'प्यार का यौवन पुकारे जा रहा है, / हो सके तो लौट आओ
रूप के सावन दुबारा / जगत कोलाहलों से/ दूर जा पाता नहीं हूँ।

श्री गौड़ की श्रृंगारपरक नवगीतों में वैयक्तिकता का स्पष्ट चित्रण मिलता है। इन रचनाओं में कवि के वैयक्तिक जीवन, अनुभवों और रूचियों की झलक मिलती है जिसमें आत्म सम्मान की भावना, साहस, विवादों से दूरी, सर्वमंगल की कामना, जीवन–संघर्ष और सृजन, अहम् की भावना आदि स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। साथ ही साथ ''प्रणयानुभूति का उत्कट एवं सरलीकरण, सरलीकृत गीत प्रवाह इन रचनाओं में है जो सहज ही बाँधता है, साथ हो लेता है और इससे अधिक किसी भी साहित्य–रचना को चाहिए क्या?''[10] इस प्रकार हम देखते हैं कि मधुकर गौड़ के गीत–नवगीतों में उनकी वैयक्तिक अनुभूतियाँ सार्वजनिकता के साथ इतनी घुली–मिली है कि वे केवल रचनाकार की ही नहीं बल्कि सामान्य जन की लगती है। वैयक्तिकता के इस सामूहिक और सार्वजनिक स्वरूप में उनकी रचनात्मकता को लोकप्रियता दी है।

संगीतात्मकता – संगीतात्मकता गीति काव्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह गीत–नवगीत का अनिवार्य तत्व है। कविवर श्री मधुकर गौड़ गीत रचना में संगीत के महत्व से सुपरिचित हैं। वे अपने गीतों में विविध प्रकार से संगीतात्मकता का विनियोग करने में सफल रहे हैं। उन्होंने आरंभ से ही भावों की तरलता और भाषा के सरलता के माध्यम से अपने नवगीतों में संगीतात्मकता को उत्पन्न किया है। निम्नलिखित पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

''फिर तुमने आधार दे दिया / बिन माँगे ही प्यार दे दिया।
मैंने तो चितवन चाही थी / तुमने हर अधिकार दे दिया।

ग ग ग

परिचय से परिचय यही हुआ / परिचय जीवन का गीत बना।
हमने तो अक्सर यह देखा / परिचय–परिचय का मीत बना।

इस प्रकार भाव के अनुरूप भाषा का प्रयोग करके श्री गौड़ ने अपने नवगीतों में संगीतात्मकता की रक्षा की है। उपर्युक्त पंक्तियों में सृजन का जैसा मधुर भाव है, वैसी ही कोमल भाषा का प्रयोग करके कवि ने संगीत तत्व का सफल विनियोग किया है। लय को सुरक्षित रखते हुए उन्होंने संगीत को बचाए रखा है। तभी तो ''संवेदनशील हृदय जब पिघलता है तो सरल–तरल होकर प्रवाहित होने लगता है फिर व्यक्ति, व्यक्ति न रहकर आत्मिक तल में प्रवेश कर जाता है।''[11] श्री गौड़ ने अपने गीत–नवगीतों में आद्योपान्त विविध प्रकार से संगीतात्मकता को बचाए रखा है वे लयसिद्ध गीतकार हैं इसलिए संगीत भी उन्हें प्रिय है। तभी तो वे अपनी रचनाओं में संगीतात्मकता को आत्मसात करने में सफल रहे हैं।

भावावेश – कविता को भावों का प्रवाह कहा जाता है क्योंकि जब रचनाकार के मन में भाव का आवेग प्रबल रूप से उमड़ता है तो कवि बिना कहे नहीं रह पाता। यही भावावेश काव्य की सृष्टि करता है। गीत जो कविता का एक रूप है, इस आवेग की सबसे अधिक आवश्यकता उसे होती है। बिना आवेग कविता तो रची जा सकती है किन्तु वह हृदय को स्पर्श करने वाली, मन को भाव–विभोर करने वाली गीत नहीं बन सकती। शायद इसिलिए भावावेश गीत–नवगीत रचना के लिए आवश्यक है। श्री गौड़ के नवगीतों को तात्त्विक दृष्टि से देखने से पता चलता है कि उनके गीत काव्य की पृष्ठभूमि में सघन भावावेश सक्रिय है। भाव और अन्य अनेक अनुभूतियाँ उनके नवगीतों में इतनी तीव्र रूप से सामने आइ हैं कि उनके आवेग में पाठक सहज ही बह जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि गीति रचना में वे पूर्णतः सफल रहे हैं। कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

मर्यादायें घुली दिवस में, मैं / परिवेश नहीं बेचूँगा
जब तक शोणित शेष कलश / में, अपना देश नहीं बेचूँगा
ग ग ग

क्या शिकवे, / क्या करे गिले, / जब मिले–बहेलिये मिले।
रिश्तों का / खुन जम गया/ स्नेह का/ जुलूस थम गया,
क्या दुआ / सलाम क्या करें / टूटे हों जब सिलसिले,
जब मिले–बहेलिए मिले।।

यह भावावेश ही है जो गीतकार गौड़ को सफलता की चोटी पर पहुँचाता है। जब भी व्यवस्था की विसंगतियों और विकृतियों से त्रस्त होकर श्री गौड़ की वाणी व्यंगात्मकता से सरावोर हो जाती है तब उनका भावावेश आक्रोश बनकर गीतों में उमड़ पड़ता है। ''रचनाकार का आक्रोश क्रांति का उद्घोष कर फूलों में विद्रोह, रोष और जोश भरकर वैसंगतिक व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का शंखनाद करने लगता है।''[12] ऐसे स्थलों पर शब्द प्रयोग सायास नहीं, अनायास है और यही अनायास आगमन उनकी गीतों को जीवन्त बनाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुभूतियों के आवेग से श्री गौड़ की रचनाएँ भवावेश की दशा में रची गयी है। जिसके कारण इनकी रचनाओं में प्राण–प्रतिष्ठा हो जाती है। तभी ये इतनी सहज, सरल और प्रवाहमयी बन जाती है।

संक्षिप्तता – संक्षिप्तता गीति का आवश्यक तत्व है। श्री अस्थाना के अनुसार – ''गीत वह विधा है जिसके माध्यम से कवि अपने अन्तर की पीड़ा एवं भावानुभूतियों को नपे–तुले शब्दों में इतने प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत करता है कि उसकी पीड़ा जन–जन की पीड़ा बन जाती है।''[13] वस्तुतः संक्षिप्तता गीत–नवगीत काव्य के अनिवार्य तत्व हैं जिसका सफल प्रयोग गीतकार श्री मधुकर गौड़ ने किया है –

'चाँद बागी न हो, सिर्फ इसके लिए,
उम्र अपनी सितारों को देता रहा,
रोज रोयी हँसी, आस की बालिका
पथ अनेकों मिले, भूल भटकाव के'

विस्तृत गीतों में चार और पाँच अन्तरा वाले गीत आते हैं। 'अक्षरों के अर्थ' गीत की ये पंक्तियाँ देखें –

'चल नदी के पार/ झरनों की हथेली पर,
जिन्दगी पहिया है तेरी,/ रास्ते हैं घर।
धूप के बच्चे हँसेगे, / कल जवां होंगे,
छांव के कंधे चढ़ेंगे,/ फिर हवा होंगे।
बन अभी खूंखार गति तू/ होश में है डर,
जिन्दगी पहिया है तेरी/ रास्ते हैं घर।'

श्री गौड़ के सभी गीत 2 से 7 तक अंतरों और टेकों वाले हैं जो कि संक्षिप्त गीतों की श्रेणी में ही आते हैं। नवगीत का यह अनिवार्य तत्व का श्री गौड़ के सभी नवगीतों में भली–भाँति निर्वहन हुआ है। इस प्रकार देखा जाय तो नवगीतकार ने न्यूनतम शब्दों में अधिकतम भावाभिव्यक्ति करके संक्षिप्तता की सभी अनिवार्य शर्त्तों को पूरा किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री गौड़ जी ने नवगीतों में गीतिकाव्य के अनिवार्य तत्वों–वैयक्तिकता, संगीतात्मकता, भावावेश और संक्षिप्तता का सफल निरूपण हुआ है। उनके द्वारा वैयक्तिकता का जिस तरह से साधारणीकरण हुआ है। मानो कवि ने जो कुछ कहा है, वहीं उसके पाठक और श्रोता का भी अनुभव है। जो उनकी लोकप्रियता का स्तंभ भी है। साथ ही साथ संगीतात्मकता का निर्वहन भी सरल भाषा, सहज, शब्द और सुबोध पंक्तियों के माध्यम से तथा यदा–कदा छंद एवं लय के कारण हुआ है। इस कारण उनके गीतों में संगीतात्मकता का प्रवाह देखते बनता है। यही नहीं उनके सभी नवगीतों में भावों के आवेग की तीव्रता सहज ही महसूस किया जा सकता है। गीत–नवगीत में भावावेश ही लयात्मकता प्रदान करते हैं। नवगीत की प्रमुख शर्त (तत्व) संक्षिप्तता है। कम से कम शब्दों में अधिक एवं गहरी बात कह देना नवगीत के प्रमुख गुण हैं जिसमें श्री गौड़ पूर्णतया सफल रहे हैं। इस प्रकार श्री मधुकर गौड़ के नवगीत तात्त्विक दृष्टि से सफल एवं उत्कृष्ट श्रेणी के हैं।

संदर्भ –

1. वृहत हिन्दी कोश – सम्पादक–कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, पृ0सं0–383, प्रकाशक–ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी।
2. श्री राजनाथ शर्मा, साहित्यिक निबंध, पृ0–169–170
3. डॉ0 शंभुनाथ सिंह, छायावादी युग, पृ0–148
4. रामदरश मिश्र, हिन्दी कविता : आधुनिक आयाम, पृ0 – 148
5. उपरिवत्
6. नवगीत : समकालीन : हिन्दी कविता, पृ0 – 72
7. गीतागिनी : 5 जनवरी, 1958, पृ 3–4
8. ओम प्रभाकर : विमर्श : 1972, आधुनिक हिन्दी कविता का वास्तविक स्वरूप, पृ0–48
9. नीरज : धर्मयुग : 5 दिसम्बर, 1965, पृ0–23
10. चन्द्रसेन विराट : 'सहज ही साथ हो जाते गीत' – आखर–आखर मोल, स0 – हृदयेश मयंक, नवांतर प्रकाशन, मुम्बई, पृ0–64
11. नर्मदा प्रसाद मालवीय : 'आत्मिक प्रेम काव्य कथा पर एक दृष्टि' – आखर–आखर मोल, सं0 – हृदयेश मयंक, नवांतर प्रकाशन, मुम्बई, पृ0–95
12. आर्चाय भागवत दूबे – 'व्यवस्था पर व्यंग्य करते गीत' – आखर–आखर मोल, स0 – हृदयेश मयंक, नवांतर प्रकाशन, मुम्बई, पृ0–78
13. डॉ0 रोहिताश्व अस्थाना : हिन्दी गजल : उद्भव और विकाश – पृ0 – 39